ए री सखी, चलो भाषा खेलें!

मुकेश मालवीय

पाठ्यपुस्तकों के पाठों पर कक्षा में नए-नए दिलचस्प अभ्यास बन सकते हैं जिनमें शिक्षक को भी मज़ा आए और बच्चों को भी। बच्चे भाषा से खेलते हुए भाषा की बारीक़ियों को भी समझते चलें, ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करता लेख। सं.

भाषा की पाठ्यपुस्तक के पाठ का स्वरूप या उस पाठ की भाषा, कक्षाओं के स्तरानुसार बदलनी चाहिए, पर यह बात भाषा की पाठ्यपुस्तकों से नदारद है। मसलन, आप कक्षा-3 में किसी महापुरुष की जीवनी जिन शब्दों और वाक्यों के ढाँचे के साथ पढ़ रहे होंगे, लगभग वैसी ही भाषा कक्षा-8 में भी किसी महापुरुष की जीवनी के लिए इस्तेमाल होती दिखेगी। तब क्या अभ्यास के प्रश्नों में कक्षा के अनुरूप कोई अन्तर होता है? मैं कहूँगा कि इसका जवाब भी आमतौर पर नहीं ही है। अन्तर केवल व्याकरण के हिस्सों के एक क्रमिक विभाजन में दिखता है। पाठ के अभ्यास प्रश्नों का पैटर्न हर कक्षा में एक जैसा होता है, जैसे– पाठ के आधार पर जानकारी वाले प्रश्न, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, ख़ाली स्थान भरो, सही विकल्प चुनो, सही जोड़ी मिलाओ, सही-ग़लत का चिह्न लगाओ, वर्तनी ठीक करो, आदि। अगर पाठ कविता है तो, इन सवालों में दी गई पंक्तियों का अर्थ बताओ, शब्दों के अर्थ बताओ, जैसे सवाल भी जुड़ जाते हैं। अभ्यास के इन निश्चित क़िस्म के प्रश्नों के उत्तर रटकर बच्चे परीक्षा पास कर लेते हैं। इस तरीक़े से बच्चे भाषा का आनन्द नहीं ले पाते व नए शब्दों और भाषा के नए ढाँचे को लिखित और मौखिक रूप में बरतने की उनकी क्षमता में वृद्धि नहीं हो पाती। मुझे लगता है, इस कारण से भी भाषा की पाठ्यपुस्तक का मौजूदा पाठ्यक्रम बच्चों में मौलिक रूप से सोच और लिख पाने की क्षमता का विकास नहीं कर पा रहा है।

पाठ्यपुस्तक के पाठों का स्वरूप कैसे बदले, इसपर मैं ज़्यादा नहीं कह सकता। कक्षा में मेरे पास काफ़ी आज़ादी है तो मैं अभ्यासों में फेरबदल की कोशिश करता रहता हूँ। चलिए, आलोचनात्मक बातें करने की बजाय, आगे मैं कुछ पाठों के नए अभ्यास यहाँ साझा करना चाहता हूँ। ये अभ्यास मैंने अपनी कक्षा के बच्चों के साथ किए हैं और इनमें भाषा को नई तरह से बरतने के मौक़े बच्चों के लिए सृजित करने की कोशिश की है। मेरी यह समझ प्राशिका (एकलव्य शैक्षिक संस्था का प्रायोगिक प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम) की *खुशी-खुशी* पाठ्यपुस्तक के अनुप्रयोग से बननी शुरू हुई।

मध्यप्रदेश में कक्षा-3 की भाषा की एक पाठ्यपुस्तक में एक पाठ है 'अमीर खुसरो की पहेलियाँ।' पाठ्यपुस्तक अपेक्षा करती है कि तीसरी कक्षा के बच्चे इन पहेलियों को पढ़कर उनके उत्तर बता पाएँ और इन पहेलियों में छिपी जानकारियों के लिए बने सवालों के उत्तर लिखें।

मैंने जब इन पहेलियों को पढ़ा तो मुझे खुसरो की पहेलियों में भाषा का एक नया सौन्दर्य नज़र आया। वाक्यों के इन लुभावने और

सरस ढाँचों का इस्तेमाल करने में मुझे और बच्चों को मज़ा आया।

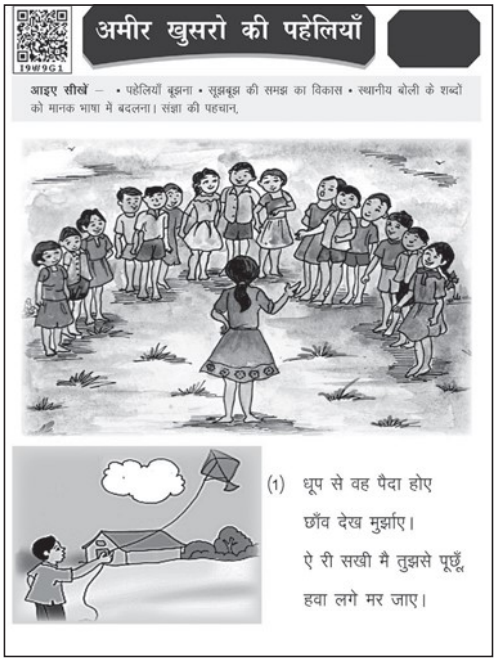

पाठ्यपुस्तक में दी गई ये पहेलियाँ हैं :

धूप से वह पैदा होए, छाँव देख मुर्झाए।
ए री सखी मैं तुझसे पूछूँ, हवा लगे मर जाए।

एक नार के हैं दो बालक, दोनों एकहि रंग।
एक फिरे एक ठाढ़ा रहे, फिर भी दोनों संग।

एक कहानी मैं कहूँ, तू सुन ले मेरे पूत।
बिना परों वह उड़ गया, बाँध गले में सूत।

आदि कटे तो सबको पाले, मध्य कटे तो सबको मारे।
अन्त कटे तो सबको मीठा, खुसरो वाको आँखों दीठा।

हमने पहले इन पहेलियों के उत्तर ढूँढ़े। अब इन पहेलियों में छिपे उत्तर खोजने के बाद आगे क्या कर सकते हैं? यह लाइन 'ए री सखी मैं तुझसे पूछूँ' कितनी अनूठी है। इसी तरह 'एक कहानी मैं कहूँ, तू सुन ले मेरे पूत' या 'एक नार के हैं दो बालक'। तो हमने इन ढाँचों का उपयोग कर नए वाक्य बनाए, जैसे– 'ए री सखी मैं तुझसे पूछूँ, आज तुमने क्या-क्या खाया', 'ए री सखी मैं तुझसे पूछूँ, आज सपने में क्या-क्या देखा', इस तरह हर बच्चे के पास इस पंक्ति के साथ एक अपना सोचा हुआ सवाल आ जाता है। या एक और उदाहरण देखें : 'एक नार के हैं दो बालक, दोनों एकहि रंग'। यह पंक्ति सुनते ही बच्चे सोच-सोचकर अपनी पंक्तियाँ बताने लगे: 'एक पेड़ के हैं दो पत्ते, दोनों एकहि रंग', और 'एक नदी के दो किनारे, दोनों दूर-दूर'। या फिर यह पंक्ति 'एक कहानी मैं कहूँ, तू सुन ले मेरे पूत', सुनकर बच्चों ने जोड़ा : 'एक कहानी मैं कहूँ, तू सुन ले मेरी दादी' और 'एक कहानी मैं कहूँ, तू सुन ले मेरे भाई'। फिर इन पंक्तियों के बाद भी पंक्तियाँ जुड़ती गईं, जैसे– 'एक कहानी मैं कहूँ, तू सुन ले मेरी दादी / कितना काम करती हो तुम, थोड़ी देर तो सुनो कहानी' आदि।

इसी तरह कुछ मज़ेदार शब्दों को अपने वाक्यों में इस्तेमाल करने की गतिविधि शुरू हुई :

जैसे– 'एक फिरे एक ठाढ़ा रहे' पंक्ति के शब्द 'फिरे' और 'ठाढ़ा' को लेकर वाक्य बनाए गए। 'वह सड़क किनारे खड़ा था', की जगह 'वह सड़क किनारे ठाढ़ा था' हुआ। 'चलो घूमने चलें' की जगह 'चलो फिरने चलें' हो गया। इसी तरह 'दोनों एक ही रंग' वाक्यांश का अपने वाक्यों में इस्तेमाल हुआ, जैसे– 'ककड़ी और करेला दोनों एक ही रंग' और 'कोयल और कौआ दोनों एक ही रंग'। 'एक ही संग' वाक्यांश को लेकर हमें सूझा कि हम इसका इस्तेमाल एक साथ दिखने वाली वस्तुओं के नाम बोलने में कर सकते हैं, जैसे– 'ताला और चाबी दोनों एक ही संग', 'कुर्सी और टेबल दोनों एक ही संग'। अब बच्चों की कल्पनाशीलता अभिव्यक्त होने लगी थी। एक बच्चे ने मज़ाक़ किया : 'दशिया और सुनीता दोनों एक ही संग', 'दादा और दादी दोनों एक ही संग'। फिर हमने एक पहेली में आए शब्द 'सबको' और 'सबने'

को लेकर वाक्य बनाए, जैसे– 'सबने मस्ती की', 'सबको डाँट पड़ी', 'सबने ताली बजाई', 'सबको मज़ा आया', आदि।

एक पहेली का उत्तर पतंग था, तो हमने पतंग बनाने की प्रक्रिया पर बातचीत की। फिर बातचीत इन सवालों व संवादों पर पहुँची कि पतंग कैसे उड़ाएँगे? किसका मन पतंग उड़ाने का करता है? पतंग और धागे के रिश्ते पर तुम क्या सोचते हो? पतंग और हवा एवं पतंग और आसमान को मिलाकर एक-एक बात बोलो।

पतंग वाली पहेली में आई पंक्ति 'बिन परों वह उड़ गया' के आधार पर भी हमने वाक्य बनाए। हमारे वाक्य थे :

'बिना पैर वह चल गया', 'बिना नाक वह सूँघ गया', 'बिना हाथ वह लिख गया', आदि।

खुसरो की ही एक और पहेली थी :

एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।

चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।

इस पहेली का उत्तर है, रात के आसमान में तारे। तो तारों की तुलना मोतियों से कैसे हो सकती है, या रूपक के ज़रिए कोई बात कैसे कही जाए, इस प्रश्न पर हमारी कक्षा में बातचीत हुई। हमने सोचा कि कुछ बातें रूपक का सहारा लेकर करें। हमने एक वाक्य चुना– मुझे तुमसे दोस्ती करनी है। इसे दूसरे शब्दों में कैसे कहा जाए? बहुत देर तक जब किसी को कोई वाक्य नहीं सूझा तो फिर हमने दोस्ती पर थोड़ी बातचीत की। दोस्ती होती है तो क्या होता है? एक बच्ची ने कहा कि हम उसके साथ बैठते

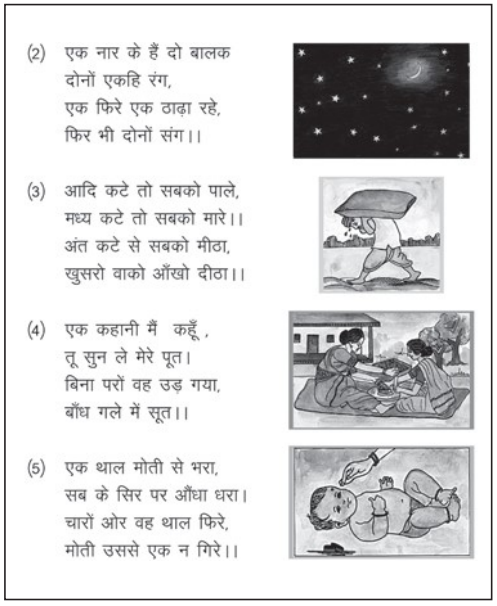

हैं। तब मैंने पूछा कि क्या यह वाक्य ठीक होगा कि 'मुझे तुम्हारे पास बैठना है।' सबने 'हाँ' कहा। फिर एक बच्चे ने कहा कि मुझे तुम्हारा टिफ़िन खाना है। एक ने कहा कि मुझे तुमसे दो (दो उंगली उठाकर) करनी है। फिर एक ने कहा कि मुझे तुमसे हाथ मिलाना है।

हमने फिर वाक्य बदला। मैंने कहा कि 'ख़ूब अँधेरी रात थी', वाक्य को हमें कहना है, पर 'अँधेरा' शब्द उसमें नहीं आना चाहिए। बच्चों ने थोड़ा उकसाने पर कहना शुरू किया– आधी रात थी, डराने वाली रात थी, रात ऐसी थी जैसे आँख बन्द करके चल रहे हों, आदि।

इस तरह खुसरो की पहेलियों का पाठ हमारी कक्षा में दो-तीन दिन चला और हमने ख़ूब मज़े किए। मैंने स्कूल से घर जाते बच्चों के मुँह से सुना– 'ए री सखी मैं तुझसे पूछूँ, मैं तेरे घर चलूँ क्या?'

मुकेश मालवीय पिछले दो दशक से भी ज़्यादा समय से स्रोत शिक्षक के रूप में सरकारी और ग़ैर-सरकारी भूमिकाओं में सक्रिय हैं। कक्षा अनुभवों को लेकर सतत लिखते रहते हैं। वर्तमान में अनुसूचित जाति विकास विभाग के शासकीय आवासीय ज्ञानोदय विद्यालय, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में शिक्षक पद पर कार्यरत हैं।

सम्पर्क : mukeshmalviya15@gmail.com